बिसफिनॉल-एः सुरक्षा या रोग!

स्वास्थ्यवर्धक पेय और भोज्य पदार्थों की पैकेजिंग शक के घेरे में है। हाल ही में हुए अध्ययन से यह बात सामने आई है कि कुछ खाद्य पदार्थों की पैकेजिंग में प्रयोग किए जाने वाले रसायन बिसफिनॉल-ए (बी.पी.ए) की अधिक मात्रा डाइबिटीज़ और हृदय रोगों का खतरा बढ़ा सकती है। यह अध्ययन पिछले दिनों अमेरिकन मेडिकल एसोसिएसन के जरनल में छपा है।

शोध के नतीजे संकेत देते हैं कि बीपीए एस्ट्रोजन हार्मोन की संकेत देने की प्रक्रिया को प्रभावित कर सकता है। इस प्रकार यह रसायन बहुत-सी असमान्यताओं (शुक्राणुओं की संख्या में कमी, परिवर्तित भ्रूणीय विकास, बच्चों के व्यवहार में बदलाव और प्रोस्टेट कैंसर) से जुड़ता है।

दुनिया भर की सरकारें बीपीए के प्रभावों को परखने में व्यस्त हैं। इसी साल अप्रैल में कनाडा की सरकार ने इस रसायन को खतरनाक घोषित किया और बच्चों की दूध की बोतलों में इसका उपयोग न करने की सलाह दी। युरोपियन फूड सेफ्टी अथारिटी के अनुसार खाद्य पदार्थों में बीपीए की मात्रा अभी हानिकारक स्तर पर नहीं है लेकिन इसके पुनर्मूल्यांकन की आवश्यकता भी महसूस होती है। दूसरी तरफ अमेरिका ने बीपीए के प्रभावों के अध्ययन के लिए कई पैनल बनाए हैं।

बीपीए हार्मोन को प्रभावित करने वाले रसायन के तौर पर देखा जाता है। यही कारण है कि ज़्यादातर अध्ययन प्रजनन और विकास पर पड़ने वाले प्रभाव के इर्द-गिर्द ही घूमते रहे हैं। मगर एक अध्ययन में 1455 वयस्कों में से 92.6 प्रतिशत लोगों के पेशाब के नमूनों में बीपीए की उपस्थिति पाई गई।

जिन लोगों की पेशाब में बीपीए की सर्वाधिक मात्रा थी उनमें सबसे कम बीपीए वालों की तुलना में 3 गुना अधिक हृदय सम्बंधी समस्याएं और 2.4 गुना अधिक डाइबिटीज़ के लक्षण पाए गए। यहां पर एक और बात गौर की गई कि बीपीए का स्तर बढ़ने पर लीवर से निकलने वाले दो एंज़ाइमों की मात्रा असंतुलित हो जाती है जो लीवर को नुकसान भी पहुंचा सकती है। लेकिन बीपीए को कैंसर, हृदयाघात और गठिया जैसी बीमारियों से जोड़ा जा सके इसके कोई स्पष्ट संकेत नहीं मिले हैं। शोधकर्ता कहते हैं कि आंकड़ों का अध्ययन बहुत ही ध्यानपूर्वक किया गया है लेकिन इसके बावजूद यह बीपीए के प्रभाव की एक झलक ही प्रस्तुत कर पा रहा है।

और यह सवाल तो अब भी बरकरार है कि क्या ये बीमारियां पहले से मौजूद थीं जो वर्षों बाद उभरी हैं या यह बीपीए का असर है। कुछ परिस्थितियों (जैसे मोटापा अथवा लीवर में गड़बड़ी) में शरीर में बीपीए के चयापचय की दर प्रभावित होती है। बीपीए सम्बंधी ज़्यादातर प्रयोग जानवरों पर किए गए हैं और प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर रोगों का बीपीए से सीधा सम्बंध स्थापित नहीं किया जा सका है। शोधकर्ताओं का कहना है कि इस अध्ययन ने बीपीए के ऊपर प्रश्न चिन्ह भर लगाया है। ***(स्रोत फीचर्स)***